"किराना घराने के मूर्धन्य गायक पंडित मणि प्रसाद जी का उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान"

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

की पी.एच.डी.

"संगीत"

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

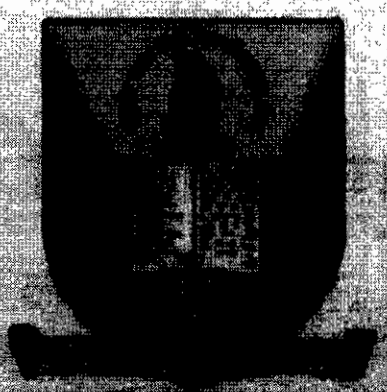

शोध निर्देशिका (आचार्या [illegible])
डॉ. विजय श्री मनुरकर
भूतपूर्व संगीत विभागाध्यक्षा
विद्यावती मुकुन्द लाल पोस्ट ग्रेजुएट
गर्ल्स कॉलेज, गाजियाबाद

शोधकर्त्री
कुमारी नेहा भट्ट

संक्षेपण (ABSTRACT)

'संगीत शास्त्र दर्षन' के अनुसार –

"पूजा से करोड़ गुणा श्रेष्ठ स्तोत्र होता है, स्तोत्र से करोड़ गुणा जप और जप से करोड़ गुणा गान श्रेष्ठ होता है, गान से अधिक श्रेष्ठ कुछ नहीं है।"

संगीत, प्रकृति प्रदत्त नैसर्गिक कला है। वीणा–वादिनी मॉ सरस्वती का अक्षय महा प्रसाद है। सृष्टि में आदि देवी– देवताओं ने नाद रूप में जगत का विकास किया है। ध्वन्यात्मक नाद से सप्त स्वर और राम–रागिनी की उत्पत्ति है।

आर्ष–ग्रन्थों में दिव्य प्रकृति के गर्भ में विविध ध्वनियों से उत्पन्न नाद को 'अनाहत नाद' भी कहा गया है। अनाहत नाद जिसे बजाया नहीं जाता जो स्वतः अपने आप ही प्रतिक्षण संपूर्ण प्रकृति में, हमारें अंतर में बज रहा है।

इस नाद–विद्या को ही कला–विद्या कहा जाता है। अतः कलाविद होना गंभीर–साधना सापेक्ष है। इसी संगीत–साधना के उपासक **"पंडित मणि प्रसाद जी"** जीवंत उदाहरण हैं।

प्राचीन समय से ही हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घरानों की चर्चा भिन्न–भिन्न रूपों में होती रही है। ख्याल गायकी में किराना घराने की अपनी प्रसिद्धि है और लोक प्रियता में अन्यतम स्थान है। इस घराने की अपनी अनोखी शैली है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा से जोडे हुए है। 'किराना घराने को विकसित और पल्लवित करने में इस शैली के साधको, गायकों (गवैयों) और चिंतकों ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। इन विभूतियों में **पंडित मणि प्रसाद जी** का स्वरूप एक भूर्धन्य गायक के रूप में हमारे समक्ष है। प्रथम अध्याय में अध्याय में पंडित जी का, किराना घराना व विभिन्न घरानों में किराना घराने की महत्ता को प्रस्तुत किया है।'

द्वितीय अध्याय में पंडित जी का जीवन–वृतांत जन्म, पारिवारिक सांगतिक वातावरण, प्रभावषाली–व्यक्तित्व, संगीत षिक्षा–दीक्षा, पंडित जी परिवार–प्रमुख के रूप में, आदि का विस्तार से वर्णन है। **पंडित मणि प्रसाद जी** का जन्म पं. सुख देव प्रसाद (पिता) मनोहरी बाई (माता) के घर, वर्धा (महाराष्ट्र) में हुआ। हालांकि इनका परिवार शुरू से यायावर रहा है। जबकि पंडित जी मूलतः बीकानेर (राजस्थान) के रहने वाले है। **पंडित मणि प्रसाद जी** प्रारंभ में महाराष्ट्र में अपने नाना–मामा के साथ भिन्न–भिन्न स्थानों पर घूमते रहे जिस कारण आपकी प्रारंभिक षिक्षा व्यवस्थित रूप से नहीं हो पायी। आपके दो सुपुत्र और एक सुपुत्री हैं जो शास्त्रीय संगीत में निष्णात हैं।

पंडित जी का जन्म सांगीतिक परिवार में हुआ। इनके परिवार में तब से संगीत था, जब संगीत घरानों की कोई भी चर्चा नहीं थी। लेकिन धीरे–धीरे पंडित जी स्थान–स्थान पर संगीत के विद्वानों के सानिध्य और संपर्क में आए, जहॉ उनके परिवार में पीढियों से संगीत का खुषनुमा वातावरण था, उसके बावजूद वे किराना घराने से जुड़ गए।

पंडित जी ने 'सुर की साधना' अर्थात रियाज़ (सुर का साधना) से सुर को सिद्ध किया जिससे उनका व्यक्तिव दिनों–दिन निखरता गया और प्रभावषाली बनता गया। सुर–साधना (रियाज़) में जहॉ इनके व्यक्तित्व में कलाकारी आकर्षण, सौम्यता–सरलता–सहजता का समावेष किया।

षिक्षा की प्राप्ति से व्यक्ति के व्यक्तित्व और चरित्र का विकास होता है। इसी भावना के तहत पंडित जी ने संगीत–षिक्षा का क्षेत्र चुना। अपने पूर्वजों जो संगीत क्षेत्र के पुरोधा थे, की परंपरा को कायम रखने के लिए 'किराना घराने' की षिक्षा ग्रहण करने का संकल्प लिया।

वास्तव में पंडित जी को परिवार में ही इतने गुरूजनों का सानिध्य प्राप्त हुआ कि उन्हें संगीत की संपूर्ण षिक्षा अपने परिवार से प्राप्त हुई। पंडित जी की गायकी में किराना घराने से प्राप्त हुई। पंडित जी की गायकी में किराना घराने के प्रत्येक लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

पंडित मणि प्रसाद जी की गायकी "मेरू खण्ड" की मानी जाती है। इस गायकी में आवाज़ का निकास, सुर का लगाव, रूहदारी आदि विषेषताएँ होती हैं। इन्होंने 14–15 वर्ष की आयु में सर्वप्रथम शास्त्रीय गायन सन् 1947 ई0 में महाराष्ट्र–मंडल, दिल्ली के लिए प्रस्तुत किया।

पंडित जी ने अपने परिवार के प्रमुख के रूप में पूर्णतः गंभीरता से निर्वहन किया है और कर रहे हैं। आपने अपने दोनों पुत्रों और पुत्री में सर्वधर्म सम्भाव के संस्कार के साथ, संगीत षिक्षा देकर निपुण एवं योग्य बनाया है।

पंडित जी का कार्यक्षेत्र अभिनव और संस्कारों से परिपूर्ण रहा है। पंडित जी का कार्यक्षेत्र विषेष रूप से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रमुख विद्या "ख्याली गायकी" से रहा है।

पंडित का संपूर्ण जीवन श्री मद्भागवत–गीता के 'कर्मण्य वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' पर आधारित रहा। हालांकि कुछ दिनों आपने दिल्ली रेडियों स्टेषन पर बतौर स्टाफ आर्टिस्ट के रूप में कार्य किया। धीरे–धीरे आप देष–विदेष में शास्त्रीय संगीत (गायन) के सम्मेलनों का प्रमुख हिस्सा बन गए। वर्तमान में भी आप रेडियों व दूरदर्षन के सुप्रसिद्ध कलाकार हैं। आपने देष–विदेष में अनेकानेक कार्यक्रमों एवं कार्यषालाओं द्वारा उत्तर भारतीय संगीत का बखूबी प्रचार एवं प्रसार किया।

गुरू–षिष्य परंपरा आदि कालीन परम्परा है। हर युग में यह संस्कारित परंपरा रही है। गुरू–षिष्य परंपरा में घराने–दार गायकी की अनुसार सबसे महत्वपूर्ण है, 'कड़ा अनुषासन'। पंडित जी ने गुरू–षिष्य परंपरा को सदैव कायम रखा है। इस परंपरा के अन्तर्गत ही, गंडा बॉधकर बहुत सारे होनहार षिष्यों को षिक्षा प्रदान की है, जो देष–विदेष में शास्त्रीय–संगीत की ध्वजा फहरा रहे है।

पंडित जी को अनेकानेक पुरस्कारों और अलंकरणों से सम्मानित किया जा चुका है। आपने अनेक रागों का निर्माण किया है – जैसे ध्यान कल्याणा, ध्यानी तोड़ी, भूपेष्वरी आदि। पंडित जी अपनी बंदिषें 'ध्यान रंग' नाम से लिखते हैं। इनकी कुछ बंदिषे विस्तार से उल्लेखित हैं।

आपने चित्रपट पर संगीत के क्षेत्र में भी अपना पूर्ण सहयोग और योगदान दिया है। विभिन्न सुप्रसिद्ध गायकों और वादकों के पंडित जी के विषय में साक्षात्कार द्वारा उद्‌गार प्रकट किए गया हैं। इसके अलावा पंडित जी के प्रति उनके अनेकों षिष्यों ने जो आज शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं, के विचार, साक्षात्कार द्वारा प्रकट किए हैं।

अंत में (परिषिष्ट में) पंडित जी की अनेकानेक उपलब्धियों के फोटोग्राफ आदि संलग्न है।